1960G Samvatsari or Chamavani

In *Jain Jagat* Feb 1960

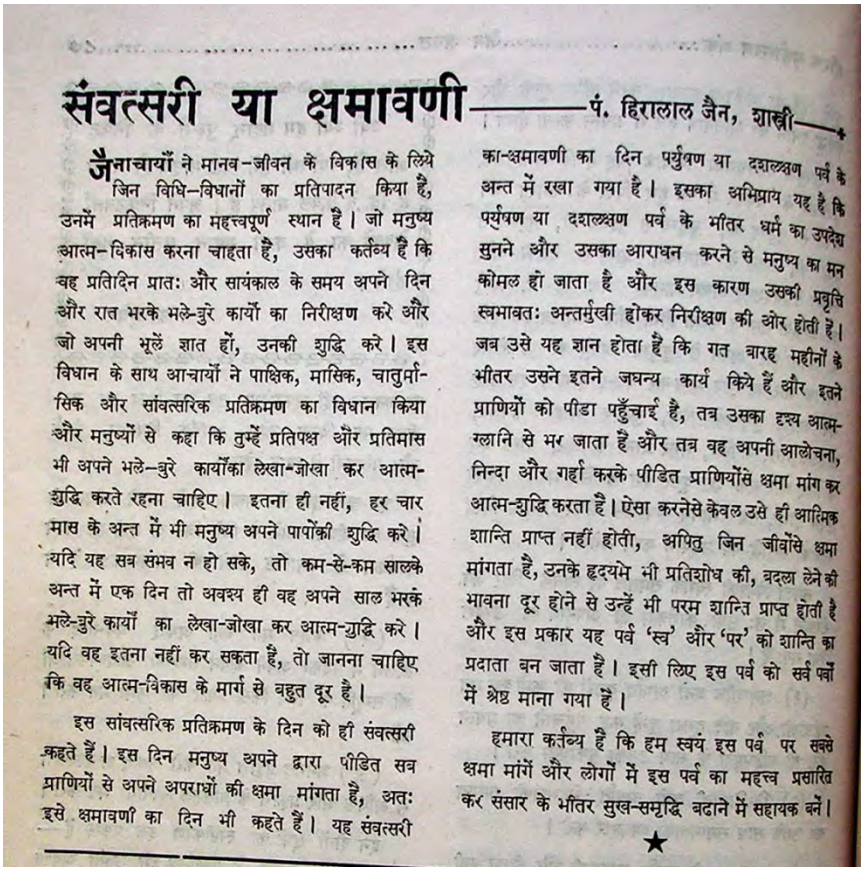

संवत्सरी या क्षमावणी

—पं. हिरालाल जैन, शास्त्री—

जैनाचार्यों ने मानव-जीवन के विकास के लिये जिन विधि-विधानों का प्रतिपादन किया है, उनमें प्रतिक्रमण का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जो मनुष्य आत्म-विकास करना चाहता है, उसका कर्तव्य है कि वह प्रतिदिन प्रातः और सायंकाल के समय अपने दिन और रात भरके भले-बुरे कार्यों का निरीक्षण करे और जो अपनी भूलें ज्ञात हों, उनकी शुद्धि करे। इस विधान के साथ आचार्यों ने पाक्षिक, मासिक, चातुर्मासिक और सांवत्सरिक प्रतिक्रमण का विधान किया और मनुष्यों से कहा कि तुम्हें प्रतिपक्ष और प्रतिमास भी अपने भले-बुरे कार्योंका लेखा-जोखा कर आत्म-शुद्धि करते रहना चाहिए। इतना ही नहीं, हर चार मास के अन्त में भी मनुष्य अपने पापोंकी शुद्धि करे। यदि यह सब संभव न हो सके, तो कम-से-कम सालके अन्त में एक दिन तो अवश्य ही वह अपने साल भरके भले-बुरे कार्यों का लेखा-जोखा कर आत्म-शुद्धि करे। यदि वह इतना नहीं कर सकता है, तो जानना चाहिए कि वह आत्म-विकास के मार्ग से बहुत दूर है।

इस सांवत्सरिक प्रतिक्रमण के दिन को ही संवत्सरी कहते हैं। इस दिन मनुष्य अपने द्वारा पीडित सब प्राणियों से अपने अपराधों की क्षमा मांगता है, अतः इसे क्षमावणी का दिन भी कहते हैं। यह संवत्सरी का-क्षमावणी का दिन पर्युषण या दशलक्षण पर्व के अन्त में रखा गया है। इसका अभिप्राय यह है कि पर्युषण या दशलक्षण पर्व के भीतर धर्म का उपदेश सुनने और उसका आराधन करने से मनुष्य का मन कोमल हो जाता है और इस कारण उसकी प्रवृत्ति स्वभावतः अन्तर्मुखी होकर निरीक्षण की ओर होती है। जब उसे यह ज्ञान होता है कि गत बारह महीनों के भीतर उसने इतने जघन्य कार्य किये हैं और इतने प्राणियों को पीडा पहुँचाई है, तब उसका हृदय आत्म-ग्लानि से भर जाता है और तब वह अपनी आलोचना, निन्दा और गर्हा करके पीडित प्राणियोंसे क्षमा मांग कर आत्म-शुद्धि करता है। ऐसा करनेसे केवल उसे ही आत्मिक शान्ति प्राप्त नहीं होती, अपितु जिन जीवोंसे क्षमा मांगता है, उनके हृदयमें भी प्रतिशोध की, बदला लेने की भावना दूर होने से उन्हें भी परम शान्ति प्राप्त होती है और इस प्रकार यह पर्व 'स्व' और 'पर' को शान्ति का प्रदाता बन जाता है। इसी लिए इस पर्व को सर्व पर्वों में श्रेष्ठ माना गया है।

हमारा कर्तव्य है कि हम स्वयं इस पर्व पर सबसे क्षमा मांगें और लोगों में इस पर्व का महत्त्व प्रसारित कर संसार के भीतर सुख-समृद्धि बढाने में सहायक बनें।

★